Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

पुराणों में मानव जीवन पर कृष्ण चरित का प्रभाव

डॉ. लता देवी
सहायक आचार्य
संस्कृत-विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय, समरहिल शिमला-171005

संक्षेपिका

पूर्वकालिन कृष्ण के अन्तर्गत कृष्ण शब्द का अर्थ दिया गया है। इसके अतिरिक्त चरित शब्द तथा कृष्ण चरित शब्द के अर्थ के साथ पुराणों में वर्णित कृष्णचरित का भी वर्णन किया गया है। आज सर्वत्र अधर्म का बोलबाला है। ऐसी परिस्थिति में धर्म के संस्थापक कृष्ण का चरित्र ही मानव जीवन की प्रेरणा का स्त्रोत बन सकता है। कृष्ण चरित से मानव जीवन पर पड़ने वाले, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक प्रभावों का वर्णन किया गया है। मनुष्य अन्तिम क्षणों में गीता को सुनकर कष्टमय जीवन से मुक्त हो जाता है। अन्त में पुराण ही ऐसे ग्रन्थ हैं जिनके माध्यम से कृष्ण विषय ज्ञान हो सकता है। अतः कृष्ण भक्ति मनुष्य को संसार रूपी अथाह सागर को पार करने की एक मात्र नौका है। यह संसार के सभी मनुष्यों को समझ लेना चाहिए। ऐसी सोच सब प्रकार के सांसारिक क्लेशों को मिटाकर शान्ति द्वारा सम्पूर्ण विश्व को आनन्दमय बना सकती है।

पूर्वकालीन कृष्ण

भारतीय संस्कृति को प्रतिपादित करने वाले तथा जन-जन को नैतिकता का वास्तविक पाठ पढ़ाने वाले भारत में केवल दो प्रकाशपुंज हुए हैं एक प्रभाकर सदृश सम्पूर्ण संसार को अपने गुणों रूपी तेज से आलोकित करने वाले सदैव ऊर्जा तथा गतिशीलता की प्रतिमूर्ति युग निर्माता दशरथ नन्दन राम तथा दूसरे सुधाकर की भान्ति शीतलता प्रदान करने वाले युगधर्म के संस्थापक कृष्ण। राम ने सत्य को आधार बनाकर धर्म का प्रतिष्ठान किया तो कृष्ण ने न्याय का आलम्बन लेकर धर्म को प्रतिष्ठित किया। आज सर्वत्र अधर्म का बोलबाला है। ऐसी परिस्थिति में धर्म के संस्थापक कृष्ण का चरित्र ही मानव की प्रेरणा का स्त्रोत बन सकता है। संसारी लोग कृष्ण के जीवन से बहुत ही प्रभावित हुए हैं और उन्हें अपना आदर्श मानते हैं। इसलिए सर्वप्रथम कृष्ण शब्द के स्वरूप पर प्रकाश डाला जा रहा है।

कृष्ण शब्द का अर्थ

कृष्ण शब्द कृष् धातु और नक् प्रत्यय के योग से रंग अर्थ में कृष् +न् रूप हुआ। न का णत्व होकर 'कृष्ण' शब्द बना। मतुप् से कृष्णवान होकर पुनः वार्तिक-गुणावचनेभ्यो मतुप् लोपः से मतुप् का लोप होकर कृष्ण शब्द बनता है। कर्षतिअरीन् के अर्थ में कृष् धातु और नक् प्रत्यय के योग से न् का णत्व होकर कृष्ण शब्द बनता है।[1]

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

चरित शब्द का अर्थ

चरित (वि) √चर्+ क्त- भ्रमण किया हुआ, पुरा किया हुआ, अभ्यास किया गया, उपलब्ध किया हुआ, भेंट किया हुआ, गमन, मार्ग, अभ्यास, आचरण, स्वयं लिखित जीवनी।[2]

कृष्ण चरित का अर्थ

कृष्ण चरित का अर्थ है कृष्ण के जीवन से सम्बन्धित छोटी से छोटी घटना का वर्णन करना है। महाभारत में कृष्ण एक स्थान पर मानवीय नायक, दूसरे स्थान पर अर्ध देव एवं अन्य स्थान पर पूर्णावतार के रूप में चित्रित हुए, जिन्हें आगे चलकर परमात्मा कहा गया। कृष्ण का जन्म द्वापर के अन्त में मथुरा में हुआ था। इनके पिता का नाम वसुदेव तथा माता का नाम देवकी था। उन दिनों इनके नाना देवक के भाई उग्रसेन इस संघ के प्रमुख थे। उनका पुत्र कंस एकान्तन्त्रवादी था। वह उग्रसेन को उनके पद से हटाकर स्वयं राजा बन गया। कृष्ण इसके विरूद्ध थे। कंस कृष्ण को मारने का इच्छुक था जिसकी कहानियां भागवतपुराण में वर्णित हैं। इनसे कृष्ण के अद्भूत पुरूषार्थ का परिचय मिलता है। अन्त में उन्होंने कंस का वध करके उग्रसेन को पुनः मुखिया बनाया।

मानव जीवन पर कृष्ण चरित का प्रभाव

महाभारतकालीन समाज के युग प्रवर्त्तक सबका उद्धार करने वाले, अन्याय के क्रान्तिकारी विरोधी कृष्ण से न केवल उस काल का जनमानस प्रभावित था अपितु आज विश्व भर की जनता उनसे पूर्णतया प्रभावित है यही कारण है कि उनका अनमोल उपदेश गीता आज विश्वजननी कृति बन गई है। पृथ्वी पर जब धर्म का विनाश हुआ तथा अधर्म की वृद्धि हुई तभी भगवान श्रीकृष्ण किसी न किसी रूप में अवतरित हुए-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।[3]

मानव जीवन पर कृष्णचरित के प्रभाव का वर्णन किया जा रहा है। इसमें सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव पड़े हैं। सर्वप्रथम कृष्ण का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है इसका वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. सामाजिक प्रभाव

मानव सामाजिक प्राणी है। मानव और समाज में अटूट सम्बन्ध है। मानव का जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। गाँव में दादा-दादी, नाना-नानी तथा वृद्धों द्वारा कहानियाँ सुनाई जाती हैं। विशेषकर सर्दियों में लोग एक

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

स्थान पर इकट्ठे होकर लोकभाषा में कथाएँ सुना करते हैं तथा इन लोकगाथाओं का कन्हैया गायन भी किया जाता है। सम्पूर्ण लोग कृष्ण को भगवान के रूप में मानते हैं।

आधुनिक युग में बच्चों की सुरक्षा के लिए कानून तो बहुत बनाए गए हैं, लेकिन उन पर व्यवहारिक रूप नहीं हो रहा है। कई दुष्ट लोग बच्चों को बन्धक बनाकर उनके माता-पिता से बहुत पैसा वसूल करते हैं। सरकार ने कानून बनाया है कि चौदाह साल तक कोई भी बच्चा कार्य नहीं करेगा परन्तु होटलों और दुकानों में छोटे-छोटे बच्चे काम कर रहे होते हैं। उनसे काम बहुत तथा पैसे कम दिए जाते हैं। उनको पढ़ाई की उम्र में भी कार्य करना पड़ता है। अतः हमारी सरकार को इस समस्या से निपटने के लिए कृष्ण नीति अपनानी चाहिए। ऐसे अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा देकर अपराध कम किये जा सकते हैं।

2. राजनैतिक प्रभाव

कृष्ण के अनुसार राजा को सभी दुष्ट राजाओं का विनाश कर देना चाहिए, जो प्रजा पर अत्याचार करते हो। इसलिए उन्होंने स्वयं भी देश को तबाही से बचाने के लिए कंस, कालयवन तथा नरकासुर आदि राक्षसीय प्रवृत्ति वाले दानवों का वध किया। इसके अतिरिक्त शिशुपाल, शाल्व, विदूरथ तथा दन्तवक्र आदि दुष्टों का वध करके पृथ्वी पर शान्ति स्थापित की-

गदानिर्भिन्न हृदय उद्वभन् रूधिरं मुखात्।

प्रसार्य केशवाहृङ्घ्रीन धरण्यां न्यपद् व्यसुः।।[4]

इन सभी दुष्टों का विनाश करके उन्होंने इस युग को प्रेरित किया कि अगर हमारी सरकार तानाशाही, अराजकता तथा आतंकवाद फैलाने वाले दृष्टों का विरोध करने के साथ उन्हें विध्वसं करें, तभी देश विकास की ओर अग्रसर हो सकता है। इसके अतिरिक्त कृष्ण कूटनीति में भी विश्वास रखते थे। उनके अनुसार राजा द्वारा लोक कल्याण हेतु कपटनीति को अपनाया जा सकता है। धर्म की स्थापना हेतु छल-कपट से उद्देश्य सफल बनना भी धर्मनिष्ठ होता है। इसलिए उन्होंने भीम को जरासन्ध की मृत्यु का रहस्य अप्रत्यक्ष रूप से समझाया तथा भीम ने उस संकेत को समझकर उसका वध कर दिया-

तद्विज्ञाय महासत्त्वो भीमः प्रहरतां वरः।

गृहीत्वा पादयोः शत्रुं पातयामास भूतले।।[5]

कृष्ण के अनुसार राजा को प्रजा के पालन के लिए हर समय तत्पर रहना चाहिए। इसलिए उन्होंने प्रजा की भलाई के लिए कालिय दमन तथा गोवर्धन पर्वत धारण किया-

गोवर्द्धन समुत्पाटय महाशैले जर्नादनः।

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

तेषां संरक्षणार्थाय धारयामास लीलया।।[6]

उनके मत्तानुसार राजा को इन्द्रियों पर काबू करके भगवान् के भजन के साथ धर्मपूर्वक प्रजा का पालन करना चाहिए-

भवन्त एतद्विज्ञाय देहाद्युत्पाद्यमन्तवत्।

मां यजन्तोऽध्वरैर्युक्ताः प्रजा धर्मेण रक्षय।।[7]

वर्तमान युग में भी शासक कृष्ण की नीति को अपनाकर देश की सुरक्षा कर सकते हैं। आजकल उनकी नीतियों का प्रयोग नहीं हो रहा है तभी देश में हर जगह साम्प्रदायिक दंगे तथा अशान्ति है। उनकी दृष्टि में राजा का कर्त्तव्य है कि देश की नारियों को दुष्ट की दृष्टि से बचाकर उन्हें समाज में उचित स्थान दें, उनके सतीत्व की रक्षा करें। तभी उन्होंने नरकासुर का वध करके सोलह हजार राजकुमारियों को बन्धन मुक्त करके पत्नी रूप में स्वीकार किया-

ततः काले शुभे प्राप्ते उपयेगे जनार्दन।

ता कन्या नरकेणासन्सूर्वतो यास्समाहृताः।।[8]

कृष्ण के कार्यों से प्रभावित होकर आजकल भी उनके अनुसार स्त्रियों से बलात्कार, बंधी बनाने तथा अश्लील हरकतें करने वाले मनुष्य को कड़ी से कड़ी सजा का विधान किया जा सकता है। ऐसे अपराधियों को कृष्ण की तरह तुरन्त सजा देकर भविष्य में अपराधों को रोका जा सकता है।

3. आर्थिक प्रभाव

कृष्ण के अनुसार शासक को प्रजा का पालन-पोषण करने के साथ उन्हें रोजगार के साधन भी जुटाने चाहिए। जब उन्होंने देखा कि कालियनाग अपने विष से यमुना के जल को विषयुक्त कर रहा है। जिसका सेवन करने से ग्वालों तथा गायों का जीवन संकटापन्न हो रहा है। तो उन्होंने कालियनाग का दमन करके यमुना के जल की विषाक्तता को दूर किया। इस प्रकार उन्होंने ग्वालों तथा गायों के जीवन की रक्षा की। इसके अतिरिक्त उन्होंने दावानल का पान करके गौओं की रक्षा की-

तथेति मीलिताक्षेषु भगवानाग्निमुल्वणम्।

निशान्य विस्मिता आसन्नात्मानं गाश्च मोचिताः।[9]

कृष्ण ने गोकुल की प्रजा की आजीविका का साधन गोधन माना है। गौओं से मिलने वाले दूध का सेवन करके प्रजा हृष्ट-पुष्ट हो सकती है। इनके गोबर से फसल बहुत अच्छी होती है तथा इनसे पैदा हुआ बैल कृषि में सहायक और गाड़ी जोतने

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

के काम आते हैं। इसलिए जब धेनुक नामक राक्षस ने गायों को सताया, तब कृष्ण ने गोप तथा प्रजा की आजीविका के साधन को बचाने के लिए उसका वध कर दिया-

तास्तानापततः कृष्णो रामश्च नृप लीलया।

गृहीतेपश्चात्यचरणान् प्राहिणोतृणराजसु।।[10]

परन्तु आजकल कोई भी इन्सान मेहनत नहीं करना चाहता। सब ने गाय पालना छोड़ दी तथा सोयाबीन से बने दूध का प्रयोग कर रहे हैं। जिससे बच्चे, बुढ़े सभी बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चों को ही केंसर, टी.वी. जैसी भंयकर बीमारियाँ हो रही हैं। पहले गाय का दूध बच्चों के लिए बहुत स्वस्थ्यवर्धक माना जाता था लेकिन अब कोई भी गाय आदि दुधारू पशु नहीं पालते हैं। अतः हमारा देश दिन-प्रतिदिन बीमारियों से ग्रसित होता जा रहा है। कृष्ण के अनुसार सरकार को प्रजा की भलाई के लिए नये-नये व्यवसाय स्थापित करने चाहिए क्योंकि नये-नये व्यवसायों द्वारा ही प्रजा के आर्थिक स्तर को सुधारा जा सकता है। उन्होंने देखा कि पशु सम्पत्ति की मात्रा अधिक है इसलिए पशुपालन तथा कृषि को एक व्यवसाय के रूप में प्रतिष्ठा दिलवाई-

कृषिर्वणिज्या तद्वञ्च तृतीयं पशुपालनम्।

विद्या ह्येका महाभाग वार्ता वृतित्रयाश्रया।।

कर्षकाणां कृषिर्वृतिः पण्यं विपणिजीविनाम्।

अस्माकं गौः परा वृतिर्वार्ताभैदैरियं त्रिभिः।।[11]

हमारा देश कृषि प्रधान है परन्तु बहुत से लोग बेरोजगार घूमते हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने पशुपालन तथा कृषि करना छोड़ दी है। सभी आरामपूर्वक रहना चाहते हैं तथा मेहनत से जी चुरा रहे हैं। सरकार कृष्ण की तरह किसानों के प्रति उपाय अपनाकर ग्रामवासियों का उत्थान कर सकती है। कृष्ण के अनुसार मनुष्य को चार विद्याएं अवश्य सीखनी चाहिए। आन्वीक्षिणी, त्रयी, दण्डनीति और वार्ता। इनमें से उन्होंने गोपों के समक्ष वार्ता (व्यापार) को महत्व दिया है-

आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिस्तथा परा।

विद्या चतुष्टयं चैतद्वार्तामात्रं शृणुत्व।। [12]

परन्तु आजकल इन विद्याओं का महत्व नहीं है। तभी इतनी बेरोजगारी बढ़ रही है। उनकी दृष्टि से राजा को ब्राह्मणों का धन हड़प करके कोष वृद्धि नहीं करनी चाहिए न ही किसी कार्य में उनसे आर्थिक सहायता लेनी चाहिए।[13] वर्तमान में शक्तिशाली

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

लोग सबका धन हड़प करना चाहते हैं। चाहे ब्राह्मण हो या अन्य जाति के लोग। उनका उद्देश्य तो दूसरों का धन हड़प करना होता है। यही कारण है कि आजकल गरीब ज्यादा गरीब तथा अमीर ज्यादा अमीर हो रहे हैं। अतः आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु कृष्ण के कथानुसार कार्य करके देश का विकास सम्भव हो सकता है।

4. धार्मिक प्रभाव

भारतीय संस्कृति का मूल मन्त्र धर्म है। धर्म शब्द की उत्पत्ति 'धृ' धातु से मानी गई है। जिसका अर्थ है धारण करना। प्रजा को एक सूत्र में धारण करने में ही धर्म की धर्मता निहित है। कहा भी गया है- ''धारणात् धर्मामित्याहुः धर्मो धारयति प्रजा।'' धर्म समाज में एकता लाने का एक अत्यन्त प्रभावशाली साधन रहा है।

भागवत पुराण में कृष्ण के अनुसार सब देवताओं की जड़ विष्णु, विष्णु की जड़ सनातन धर्म तथा सनातन धर्म की मूल गौ, ब्राह्मण, तप, यज्ञ और दक्षिणा है-

मूलं हि विष्णुद्रेवानां यत्र धर्मः सनातनः।

तस्य च ब्रह्मगोविप्रास्तापोयज्ञाः सुदक्षिणा।।[14]

सत्य, वेद, दम, शम, श्रद्धा और यज्ञ भी उनके अंग है-

विप्रा गावश्च वेदाश्च तपः सत्यं दमः शमः।

श्रद्धा दया तितिक्षा च कृतवश्च हरैस्तम्।। [15]

कृष्ण ने गौ, ब्राह्मण, दक्षिणा, सत्य, वेद, तप, शम, श्रद्धा, क्षमा, और यज्ञ को धर्म हेतु अनिवार्य माना है लेकिन आजकल गौ को आवारा पशुओं की तरह इधर-उधर छोड़ दिया जाता है। ब्राह्मणों का हर जगह अनादर होता है। तप, यज्ञ और दक्षिणा के बजाए लोग पाप करने में विश्वास रखते हैं। सर्वतः असत्य का बोलबाला है। वेदों को पहले धार्मिक ग्रन्थ माना जाता था, लेकिन आजकल वेदों के विषय में कोई जानना नहीं चाहता है। सभी लोगों की यही धारणा है कि आजकल विज्ञान का युग है तथा वेदों से कुछ भी लेना-देना नहीं है। यही कारण है कि आज का युग प्राचीन संस्कृति को पीछे छोड़ता जा रहा है आगे आने वाली पीढ़ियों को संस्कार मुक्त बनाने के लिए कृष्ण के उपदेशों का पालन करना परमावश्यक है। कृष्ण के विचारों से आज भी मानव काफी हद तक प्रभावित है। कृष्ण ब्राह्मणों को पूजनीय मानते थे। उनकी नज़र में उन्हें कोई कष्ट नहीं देना चाहिए। यही कारण था कि उन्होंने गुरू पुत्र का हरण करने वाले पंचजन्य राक्षस का वध किया-

इत्युक्तोऽन्तर्जलं गत्वा हत्वा पञ्चजनं चतम्।

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

कृष्णो जग्राह तस्यास्थितप्रभवं शंखमुत्तमम्।।[16]

उनके प्रभाव से प्रभावित होकर आज कुछ लोग ब्राह्मणों की तन-मन-धन से सेवा करते हैं। उनके लिए कुल पुरोहित भगवान् से बढ़कर होता है लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो उनका अनादर करते हैं। ब्राह्मण भी आजकल धार्मिक विचारों वाले नहीं हैं। उन्हें धार्मिक संस्कारों का पूर्ण ज्ञान नहीं है। यही कारण है कि वे जगत् में अपनी प्रतिष्ठा खो रहे हैं। उनके अनुसार धार्मिक तथा देवताओं के कार्यों में बाधा पहुँचाने वाले को मृत्युदण्ड देना चाहिए। इसलिए उन्होंने युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के अवसर पर शिशुपाल का वध कर दिया-

तावदुत्थाय भगवान् स्वान् निवार्थ स्वयं रूषा।

शिरः क्षुरान्तचक्रेण जहारापततो रिपोः।। [17]

5. सांस्कृतिक प्रभाव

संस्कृति सर्वकालिक है। यह शाश्वत है, संस्कृति का अर्थ ही सहानुभूति एवं विशालता है, जो बिना जड़वत् हुए ज्ञान का मार्ग ढूंढते हुए निरन्तर आगे बढ़ती रहती है। सृष्टि में जो भी 'सत्यं शिवम् सुन्दरम्' है उन्हें ग्रहण कर आगे बढ़ते रहना ही संस्कृति है। कृष्ण में तेज, श्री, ऐश्वर्य, लज्जा, त्याग, सौभाग्य, पराक्रम, तितिक्षा और विज्ञान श्रेष्ठ गुण थे-

तेजः श्रीः कीर्तिरैश्वर्यं ह्रीस्त्यागः सौभगंः भगः।

वीर्यं तितिक्षा विज्ञानं यत्र यत्र स मेंडशकः।।[18]

अर्थात् कृष्ण सर्वगुणसम्पन्न थे। वर्तमान युग में मनुष्य में इन सब गुणों का अभाव है। तभी वह अपनी परम्पराओं तथा रीति-रिवाज़ से दूर हो रहा है।

कृष्ण ने साधारण मनुष्य की तरह गुरू सान्दीपनि के पास विधिपूर्वक विद्या ग्रहण की तथा इष्टदेव के समान उनकी सेवा की-

ययोपसाद्य तौ दान्तौ गुरौ वृत्तिमनिन्दिताम्।

ग्राह्यन्तावुपेतो स्म भक्त्या देवमिवादृतौ।।[19]

उन्होंने गुरू और शिष्य की परम्परा को उजागर करने के लिए समस्त विद्याओं के ज्ञाता होते हुए भी गुरू के पास जाकर शिक्षा ग्रहण की। वे गुरू के साथ उनकी पत्नी से भी मातृ तुल्य व्यवहार करते थे।[20] गुरू और शिष्य की परम्परा का पालन करके उन्होंने वर्तमान युग को गुरू भक्ति के लिए प्रेरित किया।

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

कृष्ण मित्रों से बहुत प्रेमपूर्वक रहते थे। वे घर में आए हुए अतिथि को भगवान् के रूप में मानते थे अर्थात् उनका मत्त अतिथि देवों भवः था। इसलिए उन्होंने मित्र सुदामा के निज हाथों से चरण धोए तथा उनकी चरण धूलि को माथे पर लगाया-

अथोपवेश्य पर्यके स्वयं संख्युः समर्हणम्।
उपहृत्याव निज्यास्य पादौ पादावनेजनीः।।
अग्रहीच्दिरसा राजन् भगवान् लोक पावनः।
व्यलिम्पद् दिव्यगन्धेन चन्दनागुरूकुंकुमैः।।[21]
शुश्रुषया परमया पादसंवाहनादिभिः।
पूजितो देवदेवेन विप्रदेवेन देववत्।। [22]

आज भी हिन्दु धर्म में अतिथि देवो भवः की परम्परा कायम है। घर आए मेहमान की तन-मन धन से सेवा की जाती है। ये सब कृष्ण चरित का ही प्रभाव है। कृष्ण के लिए गरीब और अमीर समान थे। आजकल अमीर से सभी प्रेमपूर्वक रहते हैं लेकिन गरीब से सभी दूर भागते हैं। अगर कृष्ण की तरह सबको एक दृष्टि से देखें तो गरीब अमीर की खाई हमेशा के लिए समाप्त हो सकती है।

निष्कर्ष

कृष्ण चरित से मानव जीवन पर पड़ने वाले, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक प्रभावों का वर्णन है। उन्हें पृथ्वी पर अवतरित हुए हजारों वर्ष हो गए फिर भी उनके सिद्धान्त आज भी सर्वमान्य हैं। हर व्यक्ति उनके गीता उपेदश से प्रभावित है। यही कारण है कि मनुष्य अन्तिम क्षणों में गीता को सुनकर कष्टमय जीवन से मुक्त हो जाता है। अतः कृष्ण की भक्ति मोक्षदायी है। अन्त में पुराण ही ऐसे ग्रन्थ हैं जिनके माध्यम से कृष्ण विषय ज्ञान हो सकता है। अतः कृष्ण भक्ति मनुष्य को संसार रूपी अथाह सागर को पार करने में एकमात्र नौका है। यह संसार के सभी मनुष्यों को समझ लेना चाहिए ऐसी सोच सब प्रकार के सांसारिक क्लेशों को मिटाकर शान्ति तथा सन्तोष द्वारा सम्पूर्ण विश्व को आनन्दमय बना सकती है-

संसारसिन्धुमतिदुस्तरमुत्तितीर्षोर्नाऽन्यः
प्लवो भागवतः पुरुषोत्तमस्य।
लीलाकथारसनिषेवणभन्तरेण
पुंसो भवेद्विविचदुःखदवार्दि तस्य।।

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

सन्दर्भ-सूची

1. अमरकोश -1/1/18
2. संस्कृत शब्दार्थ-कौस्तभ, पृ.सं.-435
3. ब्र.पु., 180/27-28
4. प.पु., 6/252/3, भा.पु., 10/78/9, ना.पु.,82/108, ब्र.वै.पु., 4/113/27
5. भा.पु.,10/72/44
6. ब्र.पु., 184/14, प.पु., 6/245/182, वि.पु., 5/11/16, भा.पु., 10/25/19
7. भा.पु., 10/73/21
8. ब्र. पु., 204/14-15, प.पु., 249/75-78, वि.पु., 5/31/16, भा.पु., 10/59
9. भा.पु., 10/19/12
10. वही, 10/15/37
11. वि. पु., 5/10/28-29
12. वही, 5/10/27
13. भा.पु., 10/64
14. वही, 10/4/39
15. वही, 10/4/41
16. ब्र.पु., 194/28, वि.पु., 5/21/28
17. भा.पु., 10/74/43
18. वही,10/16/40
19. वही, 10/45/32
20. वही, 10/45
21. वही, 10/80/20-21
22. वही, 10/81/8